वैदिक विज्ञान की ओर

16

आज संसार भर में समुदायों की संख्या निरन्तर बढ़ती जा रही है, उधर उसी अनुपात में मानव-२ के बीच साम्प्रदायिक कटुता व संघर्ष भी बढ़ता जा रहा है। जो व्यक्ति वा व्यक्तियों का समूह अपने समुदाय में जितनी अधिक आस्था रखता है, वह अन्य सम्प्रदायों के व्यक्तियों अथवा व्यक्तियों के समूहों से उतनी ही अधिक घृणा वा शत्रुता का व्यवहार करता है। यह आस्था कभी-२ राष्ट्र की कानून व्यवस्था को चुनौती देने लगती है। वह अपने सम्प्रदाय के कथित गुरु के व्यभिचार, हत्या, आतंक, लूट, ठगी आदि किसी भी पाप को पाप मानने के लिए तैयार नहीं होता। वह अपने कथित गुरु के लिए मरने-मारने के लिए तैयार हो जाता है। वह हजारों मनुष्यों की हत्या कर सकता है परन्तु यह विचार करने को तैयार नहीं होता कि उसके सम्प्रदाय की मान्यताएं कितनी सत्य व कितनी मिथ्या है। वह सम्प्रदाय के नाम पर मूक पशुओं की हत्या करता है, उस मांस को प्रसाद समझकर खाता है। सत्य, अहिंसा, ब्रह्मचर्य, ईमानदारी, परस्पर मैत्रीभाव, करुणा, त्याग जैसे मानवीय मूल्यों की बलि चढ़ाकर वह अपने मजहबी उन्माद में मस्त रहता है।

मेरे विश्वभर के मित्रो! जरा विचारें कि यदि ये गुण हमारे अन्दर नहीं हों, तब धर्म कहाँ से रहेगा? ऐसे धर्म को धिक्कार है, जो इन मानवीय मूल्यों की हत्या करे, जो विश्व में अशान्ति, हिंसा व वैर की आग लगावे।

शोक है कि ऐसे दुष्ट कर्म करने वाले सभी यही सोचते हैं कि वे अपने अपने ईश्वर की आज्ञा का पालन कर रहे हैं, अपने ईश्वरीय ग्रन्थ के मार्ग पर चल रहे हैं, इससे उन्हें स्वर्ग मिलेगाकृआदि। आज संसार में इसी भ्रान्ति के कारण सम्पूर्ण विश्व बारुद के ढेर पर बैठा है।

क्रमशः .....

-आचार्य अग्निव्रत नैष्ठिक